International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 12-01-2025, Accepted: 13-02-2025, Published: 28-02-2025
Volume 11, Issue 1, 2025, Page No. 46-49

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की बाल कहानियों में जीवन मूल्य

एम. वी. गायत्री लक्ष्मी[1], डॉ. खंदारे चन्दू लक्ष्मण[2]
[1] शोधार्थी, हिन्दी विभाग, गाँधीग्राम ग्रामीण संस्था (मानद विश्वविद्यालय), गाँधीग्राम, तमिलनाडु, भारत
[2] शोध निर्देशक, असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, गाँधीग्राम ग्रामीण संस्था (मानद विश्वविद्यालय), गाँधीग्राम, तमिलनाडु, भारत

सारांश
बच्चे भविष्य के निर्माता होते हैं। बाल–मन एक खाली स्लेट की तरह ही है। बाल्यावस्था में जो भी वे अपनी आदत बनाते हैं, वहीं जिंदगी भर उनका स्वभाव होते हैं। इसलिए उस खाली स्लेट पर अपने पारिवारिक एवं सामाजिक दोनों जीवन–पक्ष में सफलता पाने के लिए आदर्श–युक्त और स्वस्थ मूल्यों को खींचना सभी माँ–बाप और शिक्षक का कर्तव्य होता है। बच्चों के मन में आदर्श स्थापना करने में बाल साहित्य अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान निभाता है। छायावादी लेखक सूर्यकांत त्रिपाठी निराला बाल साहित्य पर भी अपनी कलम चलाई। इनके बाल साहित्य तीन तरह का है – सीखभरी कहानियाँ, एतिहासिक और पौराणिक। उनकी सीखभरी कहानियाँ लगभग चालीस हैं। 'महाराणा प्रताप' उनका एतिहासिक बाल उपन्यास है और 'भक्त ध्रुव', 'भीष्म', 'भक्त प्रह्लाद', 'महाभारत' इनके पौराणिक बाल उपन्यास और 'रामायण की अन्तर्कथाएँ' इनकी पौराणिक बाल कहानियाँ का संकलन है। प्रस्तुत शोध पत्र निराला जी की 'सीखभरी कहानियाँ' का अध्ययन है जो सुबोध भाषा में बच्चों को कई जीवन मूल्य सिखाती हैं।

मूल शब्दः आत्मा–निर्भरता, हिम्मत, सहनशीलता, मानसिक बल, सच्चाई, ईमानदारी, संतुष्टता, धन का सदुपयोग, प्रयोगशीलता, कृतज्ञता

मूल आलेख

किसी भी व्यक्ति तभी अधिक फलदार और सफल बन सकता है जब वह स्वयं पर निर्भर होता है। जब किसी काम पर दूसरों से सुपुर्द होता है तब मन में स्वभाव से काम अधूरा–सा हुआ लगता और दूसरों की सहायता पर भरोसा रखने पर काम देर होने लगता है। 'समझदार चण्डूल' कहानी बच्चों को स्वयं पर निर्भर रहने का संदेश देने के साथ अपना काम खुद करने का जोर देता है। इस कहानी में एक किसान अपनी खेत काटने के लिए तैयार होने पर, वहाँ बसने वाली चिडिया अपने बच्चों के साथ दूसरे स्थान पर ठहरने का फैसला करती है। इस माजरा के हाल के बारे में बताने का हुक्म देकर चिडिया उठ जाती है। पहला दिन चिडिया के बच्चे अपनी माँ को बता देते कि आज यहाँ से निकालना क्योंकि उस किसान एक लड़के के साथ खेत काटने के लिए आने का निर्णय किया है। इस बात को सुनने पर चिडिया इस विषय को इनकार कर देती है। दूसरे दिन चिडिया के बच्चे अपनी माँ से सूचना देते हैं कि उस किसान अपने रिश्तेदारों के साथ खेत काटने के लिए आने वाला है, इस बात को भी चिडिया इनकार करती है। तीसरे दिन उस किसान किसी की सहायता के लिए आशा करने के बजाय खुद खेत को काटने का निर्णय लेता है। चिडिया के बच्चे इस विषय सीधे अपनी माँ से कहने पर चिडिया वहाँ से बच्चों के साथ निकलने लगती है और कहती – "अगर दूसरे के सुपुर्द काम छोड़ दिया जाता है तो वह कभी नहीं होता। मगर जब आदमी खुद काम करने पर आमादा हो जाता है तब वह जल्द–से–जल्द पूरा होता है।"[1]

मनुष्य अपने मन में एक इच्छा प्राप्ति के लिए बहुत कष्ट को सहन करके कोशिश करता है। यह अत्यंत सराहनीय है। लेकिन अगर उस इच्छा को हासिल करने में नाकामयाब होता है, तो उस इच्छा के बारे में बदनामी दृष्टिकोण रखना शुरू करता है। 'लोमड़ी और अंगूर' कहानी में लोमड़ी अंगूरों का गुच्छा पाने के लिए इच्छा रखता है। कूद–कूदकर उसको तोड़ने के लिए बहुत प्रयास करता है। लेकिन इस प्रयास में हार मिलता है। तो लोमड़ी बोलने लगता है – "मुझे इनकी चाह नहीं, यह अंगूर जरूर खट्टे है।"[2] इससे आम व्यक्ति का मानो भावना स्पष्ट होता है – "कुछ आदमी ऐसे हैं जो मुराद न हासिल होने पर, धोखा खिलाते हुए, दूसरों की नजर में, उस आदमी को–जिससे मतलब नहीं पूरा हुआ–गिराते रहते हैं।"[3] इस कहानी से बदनामी करना गलत बात साबित होता है।

जीवन में कोई भी स्थिति हो, मन में धीरज और धैर्य रखने पड़ता है। शारीरिक बल से ज़्यादा मानसिक बल जीने के लिए अत्यन्त आवश्यक होता है। 'हिरन का छौना और हिरन' कहानी में एक छौना शिकारी के कुत्तों से डरने के कारण एक हिरन से पूछता है और कहता है कि शायद वह हिरन उन कुत्तों से बलवान है और सुझाव देता है कि हिरन मन लगाने पर उसकी लंबी नुकीली सींग, लंबे पाँव और उसकी कड़ी और तेजी खुरियों को लेकर कुत्तों से लड़ सकता है। इस पर हिरन जवाब देता है – "तुमने जो कुछ कहा, सही है। यह वही है जो बहुत दफे मैं खुद मन–ही–मन कह चुका हूँ। लेकिन कितना भी मैं दिल कडा करूँ जब उनकी आवाज कान में आती है, मैं भाग खड़ा होता हूँ।"[4]

सहनशीलता के साथ मुश्किलों को सामना करने पर किसी भी मुश्किल आसान लगता है। 'धनी और गरीब' कहानी में एक ठंडी सुबह में एक गरीब नंगे पैर, नंगे सिर और सस्ते कपड़े पहनते हुए सड़क पर चलता है। तभी उस के पास संपन्न व्यक्ति अच्छे कुर्ता, टोपी, जूते आदि भी पहनते हुए भी उनके दांत ठंडी से टपक रहा है। "सह जाने पर मुश्किलें आसानी से झील जाती है।"[5] 'शिकारी और चमार' कहानी में किसी कार्य पूरा होने में सन्देह होने पर वादा न देने की संदेश मिलता है।

पूर्वाग्रह हमेशा धोखा देता है। कभी–कभी मनुष्यों के अन्दर गुण, दिखावट, आयु, पेशे और सामाजिक पहचान के आधार पर पूर्वाग्रह की नज़र से देखने की प्रवृत्ति होती है। 'सिंह और चूहा' कहानी इस बात को गलत साबित करती है। इस कहानी में एक सिंह एक चूहा को पकड़ता है। चूहा सिंह से किसी दिन उसकी सहायता देने की वादा देकर छोड़ने की विनती करता है। सिंह भी दयालु भाव से छोड़ देता है, लेकिन व्यंगभरी मुस्कराई से सोचता है कि इस छोटा–सा जीव से क्या भलाई हो सकती है। कुछ दिन के बाद शिकारियों सिंह को रससियों के जाल में बाँधने पर चूहा उस जाल को कुतरकर उसको जाल से मुक्त कर देता है। इस कहानी से स्पष्ट होता है – "बहुत कमजोर जीव भी साबित कर सकता है कि वह दया का कृतज्ञ है। और कभी–कभी बड़ी–से–बड़ी ताकतवाले भी कमजोरों के पूरे–पूरे ऋणी होते हैं।"[6]

इस प्रकार 'बेवकूफ हिरन' कहानी में एक हिरन अपनी सींगें पर गर्व महसूस करता है और अपने दुबले–पतले पैर को देखकर अफ़सोस करता है। एक दिन शिकारियों से बचने के लिए वह दूर–दूर तक दौड़ता है। लेकिन उसकी सींग पेड़ पर फँस जाता है। तब शिकारियों हिरन को पकड़ लेता है। आपात काल में दुबले–पतले पैर हिरण को जितनी सहायता की उतनी सहायता खूबसूरत सींगें नहीं की। हिरण तब सोचता है – "हाय, मैंने अपने सर का ही घमंड किया जिससे मुझे मौत का मुँह देखना पड़ा। मैंने अपने पैरों की खिली उड़ाई थी, अगर मैंने उनकी वैसी की तारीफ की होती तो वे मुझे बचाव की जगह तक पहुँचा चुके होते।"[7]

संतुष्टता का अर्थ जो भी इस जीवन में हम को हासिल हुआ है उसको लेकर सरल प्रकृति से जीवन बीतना। प्राप्त सुविधाओं की मूल्य समझकर और उसके के प्रति आदरणीय दृष्टिकोण रखने पर जीवन सरल एवं सहज बन जाता है। संतुष्ट रहने का सबक निराला जी की कहानियों में देख सकते हैं। 'खरगोश और मेढक' कहानी में खरगोश अपना भाग्य पर असंतुष्ट रहते हैं। उसमें से एक खरगोश आदमियों, कुत्तों और चिडियों की कृपा से रहने की स्थिति और हमेशा खतरनाक माहौल में रहने पर अपनी सोच प्रकट करता है। सभी खरगोश मेढक करारे से कूदकर आत्महत्या करने का फ़ैसला करते हैं। एक खरगोश कूदने पर सभी मेढक डरकर करारे से भाग जाता है। तब एक पुराने खरगोश कहता है – "हमें धीरज से काम लेने चाहिए और फिर कुछ दिन जीने के लिए लौट चलना चाहिए; क्योंकि हमारे भाग इतने नहीं फूटे जितने के लिए हम सोचते हैं। तुम देख रहे हो, दुनिया में ऐसे भी जीव हैं जो हमसे वैसे ही कांपते हैं जैसे हम दूसरों से।"[8]

'साँखों का पेड़ और वौन्डी' कहानी में साखू का पेड़ अपने लंबे सजावट के बारे मैं गर्व महसूस करता है। दूसरे पौधों को तुच्छ मानता है। तब वौन्डी जवाब देता है – "लकड़हारा जब अपनी तेज कुल्हाड़ी लेकर पेड़ काटने आएगा तब यह न सोचना कि तुम्हें साँखों होने से वौन्डी होना पसन्द है। वौन्डी की तरह खामोशी से बिना खतरे के निबाह करना आँख उठाकर ऊँची जगह से अच्छा है।"[9]

'शारदा और मोर' कहानी में एक मोर कोयल की सुन्दर आवाज़ पर इच्छित होकर शारदा देवी से कोयल की–सी आवाज़ माँगती है। देवी उसके सामने आकार कहती है – "हर चिडिया को उसके योग्य दान मिला है। कोयला काली और सीधी चिडिया है। उसको मधुर स्वर मिला। तुम्हारी आवाज तीखी और दिल को जलन होती है। तुम्हें जो कुछ मिला है, उसके लिए कृतज्ञ रहो। जो तुम्हें नहीं मिल सकता, उसके लिए हाथ न बढ़ाओ। अपने भाग्य से संतोष रखना सीखो।"[10]

'गधा और मेढक' कहानी में एक गधा भारी बोझ ले जाने की वजह से दलदल में गिर जाता है। वह रेंकता और चिल्लाता है जैसे उसके प्राण निकालने वाला है। तब एक मेढक कहता है – "दोस्त, जब से तुम इस दलदल में गिरे, ऐसा ढोंग क्यों रच रहे हो मैं हैरत में हूँ, जब से हम यहाँ हैं अगर तब से तुम होते तो न जाने क्या करते ? "[11] इस कहानी से विदित होता है कि हमसे भी बुरी हाल में जीने वाले मनुष्य दुनिया में मौजूद हैं।

लालच की भावना जो भी हमारे पास है उसको भी बिगाड़ देता है। 'कुत्ता और परछाई' कहानी में जब एक कुत्ता नदी का पुल पार करने वक्त अपनी छाया को पानी में देखने पर ईर्ष्या होकर सोचता है – "वाह!, मैं यह टुकड़ा लूँगा।"[12] जब उस टुकड़ा को भी पाने के लिए तड़पता है वह उसका मुँहवाला टुकड़ा को गिरा देता है।

आत्म–सम्मान एक प्रकार का संपत्ति है। जो भी जीव हो उसके अधिकार के अनुसार ही श्रम कर सकता है। इस बात को सिद्ध करती है 'खच्चर और छाँह' कहानी। इस कहानी में एक आदमी खच्चर को किराये पर लेता है। एक गर्मी दिन में दोनों शहर जाते हैं। धूप से दोनों थक हो जाते हैं और छाँह नहीं मिलने पर उस आदमी छाँह के लिए खच्चर को खड़े रहने का हुक्म देता है। उस पर खच्चर कहता है – "तुमने खच्चर को किराए पर लिया है न कि छाँह को।"[13]

सच्चाई और सच बोलने फ़ायदा और नुकसान निराला जी की 'भेडिया, भेडिया' और 'वरुणदेव और लकड़हारा' दोनों कहानियों में दृष्टिगोचर है। ' भेडिया, भेडिया' कहानी में एक चरवाहा लड़का मज़ाक उठाने के लिए कभी–कभी गाँव वालों के बीच भेडिया आने का डर फैलाता है। एक दिन सच में एक भेडिया उस लड़का का भेड़ को मार डालता है। खबराकर उस लड़का गाँव वालों को सावधान रखने के लिए बताता है। लेकिन अभी गाँव के लोग कहता हैं – "अबकी बार चकमा नहीं चलने का। चिल्लाता रहे।"[14] 'वरुणदेव और लकड़हारा' कहानी में जब लकड़हारा लकड़ी काटते समय कुल्हाड़ी धोके से नदी में चली जाती है। अपने भाग्य से कोसकर वह वरुणदेव को पुकारता है। तब वरुणदेव उसके सामने आकार उसके हाल के बारे में जानकारी प्राप्त करता है। पहली बार वरुणदेव नदी में डूबकर एक सोने की कुल्हाड़ी दिखाकर पूछता है कि क्या यह उसकी कुल्हाड़ी है लकड़हारा नहीं कहने पर वरुणदेव एक चाँदी की कुल्हाड़ी दिखाता है। लकड़हारा इसको भी मना कर देता है। तीसरी बार एक साधारण कुल्हाड़ी दिखाता है और लकड़हारा कहता है कि हाँ, यही मेरी कुल्हाड़ी है। तब वरुणदेव उसकी ईमानदारी को देखकर कहता है – "तुम भले आदमी हो। देवता ऐसे ही आदमियों को प्यार करते हैं। मेरे साथ तुमने जैसा बर्ताव किया है, इसके बदले में हम तुम्हें तुम्हारी–वाली कुल्हाड़ी के साथ वह सोने और चाँदवाली कुल्हाड़ियों भी देंगे।"[15]

जीवन में स्वार्थ, नकारात्मक, बेईमान और अनैतिक व्यक्तियों से दूर रहना ज़रूरी है। निराला जी की बाल कहानियों में इस सबक कूट–कूट कर भरा पड़ा है। 'मैं और हम' में दो पथिक रास्ते में चलने के समय एक पथिक को रुपयों से एक भारी थैली मिलता है। तब दूसरा कहता है – "जब हम दोनों एक साथ रास्ता चल रहे हैं, तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए कि मैंने यह चीज पड़ी पाई, बल्कि यह कि हमने पाई।"[16] कुछ देर के बाद उस थैली का असल मालिक इनको चोर समझकर रास्ते के आम लोग के साथ उनके पीछे दौड़ते हुए आकार उनको पकड़ लेता है। तब दूसरा पथिक कहता है – "मैं हरगिज जान से हाथ धोनेवाले मामले में साथ नहीं दूँगा।"[17]

'दो घड़े' कहानी में मिट्टी का घड़ा और पीतल का घड़ा नदी के किनारे में थे। एक बहाव में दोनों नदी में चले गए। मिट्टी वाला पीतल वाला से दूर रहता था। पीतल वाला जब उसको धक्का न लगने की बात करने पर मिट्टी वाला कहता – "तू जान–बूझकर मुझे धक्के न लगाओगे, सही है; मगर बहाव की वजह हम दोनों जरूर टकराएंगे। अगर ऐसा हुआ तो तुम्हारे बचाने पर भी मैं तुम्हारे धक्कों से न बच सकूँगा और मेरे टुकड़े–टुकड़े हो जाएंगे। इसलिए अच्छा है कि हम दोनों अलग–अलग रहें।"[18]

'लोमड़ी और कौआ' कहानी में लोमड़ी कौआ के मुँह में एक बढ़यिा पेड़ा देखकर उसको कौआ से छीन लेने के लिए बढ़ा–छड़ा कर कौआ को तारीफ़ करता है और उसकी आवाज़ को दूसरी चिडिया से बहत्तर कहकर उसका आवाज़ दिलाने का ताज़ा करता है। कौआ चोंच खोलने पर पेड़ा लोमड़ी के पास गिर जाता है। तब लोमड़ी कहता है – "मैंने तुम्हारी खूबसूरती पर तारीफ के पुल बाँधे, जनाब कौए साहब, मगर तुम्हारी अक्ल पर परदा ही पड़ा रहने दिया।"[19] 'जंगल और कुल्हाड़ी' कहानी में एक जंगल लोहार को लकड़ी देता है। बाद में ही उसकी समझ में आता है कि एक दिन उस लोहार उस जंगल को भी सर्वनाश करेगा।

'भेड़ का हैरान करनेवाला कुत्ता' कहानी में एक गड़रिये अपने भेड़ों के साथ एक कुत्ता को भी पालन–पोषण करता है। बहुत

प्यार से उस गड़रिये कुत्ता को देखभाल करता है लेकिन एक दिन उसको पता चला कि कुत्ता भेड़ों को परेशान कर रहा है। अपना मन बदलकर गड़रिये उस कुत्ता को मरने के लिए तैयार रहने को कहता है। कुत्ता उसकी गलत के लिए विनती करने पर गड़रिये कहता है – "भेड़ों को मारना भेड़ियों का स्वभाव है; मगर जब भेड़ों का रखवाला कुत्ता ऐसा करता है, वह साबित करता है कि वह दगाबाज के सिवा और कुछ नहीं।"[20]

'दुमकटी लोमड़ी' कहानी मैं एक लोमड़ी जाल में फँसकर उससे निकालने की कोशिश में अपना पूँछ कट जाती है। पूँछ के बिना उसका दिखावट उसको अच्छा नहीं लगा। उसको लगा कि सभी लोमड़ी उस पर मज़ाक उठायेंगे। एक दिन उस लोमड़ी सभी लोमड़ियों को इकट्ठा करके पूँछ के बारे में भाषण देता है कि सच में पूँछ से कोई फ़ायदा नहीं है और उसको काट देने को कहता है। "कुछ लोग ऐसे हैं जो दूसरों की भलाई के लिए उन्हें सीख नहीं देते, बल्कि इस तरह वे अपना ही कोई मतलब गाँठना चाहते हैं।"[21]

'साही और साँप' कहानी में सर्दी के दिन में एक साँप एक साही को अपना बिल में रहने को स्थान देता है। साही आराम से वहाँ जगह दख़ल करता है। जब भी साही हिलता है तब साँप को कुतरने जैसा लगता है। तब साँप मेहरबानी से साही से कहता है कि इस बिल में थोड़ी जगह ही है और दोनों यहाँ ठहरने कुछ असुखद लगता होगा। तब साही उसको उत्तर देता है – "ऐसी हालत में जिसे रहने की दिक्कत हो इसे चला जाना चाहिए। मेरी पूछते हो, तो मैं बड़े आराम से हूँ। अगर तुम्हें आराम नहीं तो तुम जब चाहो, इस बिल को छोड़ जाओ।"[22]

'शिकार को निकला शेर' कहानी में सभी जंगल के जानवर अपने–अपने हिस्से लेने की वादा पर एक हिरण को भोजन के लिए पकड़कर मार डालते हैं। लेकिन जंगल का शेर सब को धक्के मारकर गुर्राता है – "बस हाथ हट लो। यह मेरा है, क्योंकि में जंगल का राजा हूँ; और यह हिस्सा इसलिए मेरा है क्योंकि मैं इसे लेना चाहता हूँ, और इसके लिए मैंने बड़ी मिहनत की है। और इस चौथे हिस्से के लिए तुम्हें मुझसे लड़ना होगा अगर तुम इसे लेना चाहोगे।"[23] इससे प्रकट होता है कि शक्ति को सत्य से ज़्यादा बल है।

'कौए और घोंघा' कहानी में एक कौआ को खाने के लिए एक घोंघे की खपरी फोड़ने के किए कोशिश करता है। लेकिन उसको नहीं हो पाने पर दूसरा कौआ आसमान पर ऊँचे जाकर घोंघे को पत्थर पर छोड़ देने की सलाह देता है। पहला कौआ ऐसा करने पर दूसरा कौआ उस घोंघा को छीन लेकर उड़ जाता है। "जो हमें ऐसी सीख देते है, वे ऐसा अपने फायदे के लिए कहते हैं, न कि हमारे फायदे के लिए।"[24] इस प्रकार 'भेड़ियै और भेड़ें' कहानी में दुश्मन की बात पर भरोसा करना एक नादान की बात कहा गया है।

धन का सिर्फ इकट्ठा करना व्यर्थ की बात है। धन का निवेश करने पर ही उसकी कीमत बढ़ती है और धन को मूल्यवान समझा जाता है। निराला जी 'कंजूस और सोना' कहानी के माध्यम से इस बात को प्रकट करते हैं और धन की मोह पर परिवार की देखभाल न करने की भौतिकतावाद–प्रवृति को भी दर्शाते हैं। इस कहानी में एक ज़मींदार आदमी सोने पर अधिक चाह रखता है। दिन–ब–दिन वह उसके ज़मीन को बिककर, उससे प्राप्त पैसों से सोने खरीदता है। परिवार की देखभाल से ज़्यादा वह धन कमाने और सोने की वस्तुओं का संकलन करने में उत्सुक रहता है। अंत में सभी सोने पर एक गोल बनाकर ज़मीन में गाड़ता है। रोज़ सुबह वह उसे देखता रहता है। एक दिन सोने का गोला गायब होने पर गुस्सा होता है। तब एक व्यक्ति कहता है – "अस्ल में तुम्हारे पास कोई पूँजी नहीं थी, फिर कैसे वह तुम्हारे हाथ से चली गई तुम सिर्फ एक शौक ताजा किए हुए थे कि तुम्हारे पास पूँजी थी। तुम अब भी खयाल में लिए रह सकते हो कि वह माल तुम्हारे पास है। सोने के उस पीले गोले की जगह उतना ही बाद पत्थर का एक टुकड़ा रख दो और सोचते रहो कि वह गोला अब भी मौजूद है। पत्थर का वह टुकड़ा तुम्हारे लिए सोने का गोल ही होगा, क्योंकि उस सोने से तुमने सोनेवाला काम नहीं लिया। अब तक वह गोल तुम्हारे काम नहीं आया। उससे, आँखें सेंकने के सिवा काम लेने की कभी तुमने सोच ही नहीं।"[25]

'पथिक और सीपी' कहानी से यह सीख मिलती है कि जब दो व्यक्ति सहनशीलता के बिना झगड़ते हैं तो किसी तीसरे आदमी उस परेशान से लाभ उठा सकता है। इस कहानी में दो पथिक समुद्र के किनारे समय काटने के लिए जाते हैं। वहाँ एक सीपी के लिए दोनों झगड़ा करते हैं। तीसरे आदमी वहाँ आकार सब माजरा सुनकर उस सीपी को लेकर भीतर वाले हिस्से को खाता है और कहता है – "महाशय, अदालत ने आप दोनों को सीपी का एक–एक हिस्सा दिया है। ले लीजिए और घर चलकर आराम से जिंदगी वसर कीजिए।"[26]

समाज में 'लोग क्या कहेंगे' की प्रवृत्ति मौजूद है। लोग की बात से डरने वाले व्यक्ति अपना पथ से हिलकर अपनी निजी वैयक्तिक असमिता को खो देते हैं। इस यथार्थ को चित्रित करती है 'बुड्ढा आदमी और गधा' कहानी। इस कहानी में एक बुड्ढा अपने लड़के और एक गधा के साथ बाज़ार जा रहे हैं। लोग कहते हैं दृ "कैसे बुद्धू हो तुम दोनों हो कि इस गधे को बिना सवारी के लिए जा रहे हो। तुम दोनों में यह एक को पीठ पर ले सकता है। इस तरह एक की पैदल चलने की तकलीफ बच जाएगी।"[27] बुड्ढा आदमी इस बात को मानकर अपने लड़के को गधे पर चढ़ा देता है। फिर आपस में लोग कहते हैं – "उस नालायक आलसी बच्चे को देखो जो मजे में गधे पर चढ़ा चल जा रहा है। यह बेचारा बूढ़ा बाप पैदल चलता हुआ धूल फांक रहा है। लानत! नालायक आलसी बच्चे। उतर और अपने बाप को चढ़ा।"[28] यह बात भी मानकर दोनों वैसा ही करते हैं। कुछ और दूर चलने पर एक गाँव की औरतें कहती हैं – "देखी तो इस आलसी बुड्ढे को। बचकाने गधे की पीठ पर एंठता चल जा रहा है और यह छोटा–सा बच्चा पीछे–पीछे दौड़ रहा है। इस बुड्ढे को चुल्लू–भर पानी की तलाश करनी चाहिए।"[29] इस बात को भी मानकर दोनों गधा पर सवार करते हैं। कुछ दूर जाने के बाद एक आदमी बुड्ढा से कहता है कि लोग उनपर मज़ा उठायेंगे। बुड्ढा लट्ठे में उस गधा के पैर को बाँधकर दोनों बुड्ढा और लड़का अपने कंधों पर ढोकर एक पुल की ओर बढ़ जाते हैं। वहाँ मौजूद लोग इस पर मज़ा उठाकर खूब हँसते हैं। पैरों की रस्सी टूट जाने पर गधा नदी के पुल पर गिर जाता है। दूसरों की बात सुनकर बुड्ढा अपना गधा को कुर्बान करता है।

आलसी एक मानसिक रोग है। इसका निवारण व्यक्ति खुद अपने आप ही कर सकता है। 'महावीर और गाड़ीवान' कहानी में यह सबक मिलता है कि आलसीपन में कोई भी देवता सहयोग नहीं देगा और ईश्वर उसकी मदद करता है जो अपने आपको मदद करता है। इस कहानी में एक गाड़ीवान सवार करने के समय गाड़ी के पहिये एक खन्दक में धँस जाता है। बैलों भी आगे नहीं बढ़ पाते हैं। उस समय में घटना के अनुसार आवश्यक कार्य करने के बजाय वह चिल्लाकर देवताओं की सहायता माँगता है। महावीर नामक एक देवता गाड़ीवान के सामने आकार कहता है – "अरे आलसी आदमी, पैजनी से अपना कन्धा लगा, और बैलों को बढ़ने के लिए ललकार। अगर इस तरह गाड़ी नहीं निकली, तब तेरा काम देवताओं को पुकारना होता है। क्या तुम्हारे विचार में यह आता है कि जब तुम खड़े हो, उन्हें तुम्हारे लिये काम करना पड़ता है यह अनुचित है।"[30]

जीवन का अर्थ और सुख अपने आप जानने से होता है, जैसे हमारे बल और कमज़ोरियाँ। इस जानकारी के बिना दूसरों पर अधिकार और शासन करना बेकार की बात है। इस सबक 'बन्दर

और लोमड़ी' कहानी में दृष्टिगोचर है। इस कहानी में जंगलों के जानवर राजा मर जाने के बाद सभी जानवर नए राजा को चुनने के लिए चुनौती चलाते हैं। कई जानवर इस पद के लिए तड़पते, अंत में एक बन्दर को राजा बनाने का फ़ैसला करते हैं। लोमड़ी इस पर खुश नहीं होता है। बन्दर को धन की इच्छा दिखाकर जल में बाँध देता है। दर्द और गुस्सा से बन्दर चिल्लाने पर लोमड़ी कहता है – "वाह, वाह! भोंदू महाराज! दूसरों पर शासन तुम क्या करोगे जब अपनी भी खबर तुम्हें नहीं।"[31]

कार्यरत रहने में जीवन प्रयोगशील होता है। 'सौदागर और कप्तान' और 'खरगोश और कछुआ' दोनों कहानियों में बच्चों को कार्यरत रहने का सबक मिलता है। 'सौदागर और कप्तान' कहानी में कप्तान और सौदागर अपने–अपने पिता के देहांत की बात करते हैं। कप्तान देहांत की बात करने पर कहता है कि उसके पिता, उसके दादा और उसके परदादा समुद्र में डूब कर मरे थे। तो सौदागर कहता है कि जैसे आम लोग पलंग पर सुख की मौत पाते हैं उसी तरह उनके पिता का देहांत हुआ। सौदागर कप्तान से पूछता है कि क्या उसको भी समुद्र में डूब जाने का भय नहीं तब कप्तान उत्तर इस तरह देता है कि बिल्कुल नहीं। कप्तान कहता है – "पलंग पर लेटने का जितना खौफ होना चाहिए, उससे ज्यादा मुझे समुद्र में जाने का नहीं।"[32] इस प्रकार 'खरगोश और कछुआ' कहानी में जब खरगोश और कछुआ को दौड़ने की प्रतियोगिता होता है। कछुआ को तुच्छ समझकर खरगोश सोचता एक नींद ले लेता है। इस समय में कार्यरत कछुआ जीतनेवाली खूंटी को पार करता है।

कृतज्ञ रहने की सीख 'बकरा और अंगूर की लता' कहानी में मिलती है। इस में शिकारियों से पकड़ जाने के भय से एक बकरा अंगूर की घनी लता के अन्दर जाकर छिप जाता है। शिकारियों बहुत दूर नहीं गया हैं। तो बकरा अंगूर की पततियों को कुतर–कुतर कर खाता है। शिकारियों बकरा की खोज में वापस आने पर उसको पकड़ लेते हैं। "जिसने उसे अपनी अँधरी गोद में छिपाया था, उसे को चरकर साफ़ कर देने का उसका कसूर था।"[33]

निष्कर्ष

जिस क्षण बच्चा पैदा होता है, उसी क्षण से वह दुनिया के बारे में सीखना शुरू कर देता है। वह सोचता है कि क्या सही है ? गलत क्या है ? क्या स्वीकार्य है ? क्या उपेक्षित है ? इसका जवाब निराला जी की सीखभरी कहानियाँ में मिलती हैं और दस वयस्क बच्चों को जीवन के विभिन्न पहलुओं का यथार्थ जानने में और बच्चों के मन में आदर्श मूल्यों स्थापना पैदा करने में कामयाब हैं।

संन्दर्भ सुची

1. संपादक – नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली – 7, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण – 1983, पृष्ठ. सं. 293
2. वही, पृष्ठ.सं. 294
3. वही, पृष्ठ.सं. 294
4. वही, पृष्ठ.सं. 296
5. वही, पृष्ठ.सं. 312
6. वही, पृष्ठ.सं. 294
7. वही, पृष्ठ.सं. 301
8. वही, पृष्ठ.सं. 299
9. वही, पृष्ठ.सं. 297
10. वही, पृष्ठ.सं. 311
11. वही, पृष्ठ.सं. 312
12. वही, पृष्ठ.सं. 312
13. वही, पृष्ठ.सं. 299
14. वही, पृष्ठ.सं. 305
15. वही, पृष्ठ.सं. 307
16. वही, पृष्ठ.सं. 295
17. वही, पृष्ठ.सं. 296
18. वही, पृष्ठ.सं. 294
19. वही, पृष्ठ.सं. 298
20. वही, पृष्ठ.सं. 306
21. वही, पृष्ठ.सं. 307
22. वही, पृष्ठ.सं. 308
23. वही, पृष्ठ.सं. 316
24. वही, पृष्ठ.सं. 317
25. वही, पृष्ठ.सं. 300,301
26. वही, पृष्ठ.सं. 314
27. वही, पृष्ठ.सं. 310
28. वही, पृष्ठ.सं. 310
29. वही, पृष्ठ.सं. 310
30. वही, पृष्ठ.सं. 302
31. वही, पृष्ठ.सं. 303
32. वही, पृष्ठ.सं. 305
33. वही, पृष्ठ.सं. 314